(4) तकनीकी अनुवाद को समझाएँ।

आज का युग तकनीकी एवं वैज्ञानिक का है इसलिए आज वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्रों में निरंतर अध्ययन, अनुसंधान, चिंतन और लेखन हो रहा है। इसी के फलस्वरूप अंग्रेजी तथा विश्व की अन्य प्रगतिशील भाषाओं में प्रचुर मात्रा में ज्ञान-प्रधान साहित्य रचा जा रहा है। जब हम तकनीकी क्षेत्र की बात करते हैं तो हमारे सामने केवल टेक्नोलॉजी अथवा प्रौद्योगिकी या अभियांत्रिकी जैसे विषय सामने आ जाते हैं। परंतु अनुवाद की दृष्टि से तकनीकी का अर्थ है जो अनुवाद वैज्ञानिक साहित्यिक, बैंकिंग, प्रशासनिक एवं विधिक प्रकृति से इतर प्रकृति का हो व जिसमें सामान्य विषयवस्तु से इतर वस्तु-वर्ण्य विषय हो जो चाहे शिल्पकला का हो या प्रौद्योगिकी का, चाहे वह कर्मशाला का अनुवाद हो या विद्युत विभाग का, सभी जगह कुछ विशिष्ट अभिव्यक्तियाँ होती हैं।

ज्ञान का एक क्षेत्र है विधि अथवा कानून। लगता तो यह है कि कानून का विज्ञान से क्या संबंध परंतु वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग ने कला, विज्ञान, साहित्य, विधि आदि समेत कई स्थानों पर एक-दूसरे के समानार्थी बना दिया। अतः इनका एक-दूसरे में सम्मिलित हो जाना इन्हें तकनीकी प्रकृति का बना देता है। तकनीकी अनुवाद के पाठक प्रायः ऐसे व्यक्ति होते हैं जो तकनीकी कार्यों को हिंदी में करने हेतु इससे मूल लेखन सीखना चाहते हैं अथवा तकनीकी कार्यों से जुड़े होते हैं। अतः दोनों ही प्रकृति के पाठकों को दृष्टि में रखकर अनुवाद करना चाहिए।

Scanned with CamScanner

⑩

तकनीकी अनुवाद की प्रमुख समस्याएँ :—

(i) ज्ञानात्मक साहित्य का अभाव (मौलिक/अनुदित)

(ii) उचित परिप्रेक्ष्य का अभाव

(iii) अनुवाद के लिए पुस्तकीय चयन समस्या

(iv) स्वत्वाधिकार अथवा अनुवाद-अधिकार की समस्या

(v) वैज्ञानिक लेखन-परंपरा का अभाव

(vi) भारतीय भाषा के निश्चित स्वरूप का अभाव

(vii) प्रतीकों और संकेतों के अनुवाद की समस्या

(viii) संदर्भ-ग्रंथों का अभाव

(ix) पारिभाषिक शब्दावली का अभाव और उसकी अनेकरूपता

(x) अनुवादकों का अभाव

(xi) लौकिक भावना का अभाव

(xii) संगठन और समन्वय का अभाव

Scanned with CamScanner